श्री संत तुकाविप्र रचीत हरीपाठ

देवा विठ्ठला हे प्रिती। तुज नमन विनंती।
नित्य नेम नामावळी। हरी विठ्ठल धूमाळी।
ऐसा गजर आभंग। सर्व काळ संत संग।
तुकाविप्र म्हणे नेम। सर्वा अंगी सत्य प्रेम।

सांगितली ऐसी वाट। नाम कथा वैकुंठ।
जनी वनी कोठे वसा। हरी नाम लावा धोसा।
विप्र आज्ञा ऐसी आहे। न सोडावी भक्ती सोये।
तुका चाले तया पंथे। विप्र आज्ञेच्या सामथे

विप्रआज्ञेचा प्रसाद। नाम किर्तनी प्रसिद्ध।
ब्रम्हानंद सर्वकाळ। हा किर्तन कल्लोळ।
नित्य संत समागम। भक्ती सर्वांगासी प्रेम।
तुकाविप्र सत्ता ऐसी। नाम गावे दिवा निशी।

सेवा सदगुरुची सार। नामकथा निरंतर।
भाग्यवंता घडे ऐसे। येरा वर्म कळे कैसे।
गुरुकृपा जयावरी। मुखी नाम त्याचे हरी।
नामधार धन्य एक सर्व तयापाशी सूख।

नित्य आमुचा हा नेम। हरी नाम गर्जावे।
संत चरणी लौळावे। भक्ती भावे सर्वदा।
संत बसावै संगती। क्षमा दया युक्त शांती।
गुरु आज्ञेचे हे धडे। सत्य चालती उघडे।
तुकाविप्र म्हणे गडे। नित्य नाम हे रोकडे।

नाम गाती तया देव पालवतो।
चला रे म्हणतौ वैकुंठासी।
वाटा देईन मी आपुल्या सुखाचा।
राणा पंढरीचा वदे ऐसा।
तुकाविप्र म्हणे भाव भक्ती युक्त।
नाम गावे सत्य सर्व काळ।

माझे गाती नाम। तया मागे पुढे
ब्रम्ह उभे धेंडे। आ ब्रम्हे मी।
भय चिंता नाही। आवघे माझे मी।
भक्तभोळे नामी। वीतरागी।
विश्वरुपे मी ची। सर्वांगे नटलो।
विश्वात्मा जाहलो। भक्त देही।
तुकाविप्र म्हणे। विठ्ठल गर्जना
विठ्ठल समता। आंगी येते।